श्रातिश्व एव ज्योतिश्वते। श्रादित्यमेवामुिषाँ क्षोते। ज्योतिश्वते। ज्योतिषान्ताऽसा इमे लोका भवन्ति। य- एवं वेदे। भ्रवमिस पृथिवीं दृश्हेत्याह। पृथिवीमेवै- तेन हश्हित। धर्मस्यन्तिश्वं दृश्हेत्याह। श्रानिश्वनिमेवै- मेवैतेन हश्हित। ध्रमस्यन्तिश्वं दृश्हेत्याह। श्रानिश्वनिमेवै- मेवैतेन हश्हित। ध्रमसमिस दिवं दृश्हेत्याह। दिवं- मेवैतेन हश्हित॥ २॥

धर्मामि दिशे दृश्हेत्या ह। दिश्र एवतेन दृश्हित। दृश्हेत्या हम लोकाः पुजया पश्चिः। य एवं वेद। ची एयं कृपालान्युपद्-धात। चयं द्रमे लोकाः। एषां लोकानामार्थे। एक-मयं कृपालमुपद्धात। एकं वा अये कृपालं पुरुषस्य सम्भवति॥ ३॥

श्रय दे। श्रय वीर्ण। श्रयं वत्वारि। श्रयाष्टी।
तस्माद्षाक्षपालं पुरुषस्य शिरः। यदेवं कृपालान्युपद्धाति। यज्ञो वै पुजापतिः। यज्ञमेव पुजापतिः सरस्करोति। श्रात्मानमेव तत्सरस्करोति। तर सरस्कतमात्मानम् ॥ ४॥

श्रमुष्मिँ स्रोतन्परैति। यद्षावुपद्धाति। गाय-विया तत्सिमातम्। यन्नवं। विष्टता तत्। यद्श्रं। वि-